अपठित गद्यांश

तुलसीदास भारत के श्रेष्ठ भक्ति-कवियों में से एक हैं। वे भक्ति आंदोलन के निर्माता माने जाते हैं और उनके साहित्य में भक्ति आंदोलन के सामाजिक महत्व की गहरी झलक मिलती है। भक्ति आंदोलन का सामाजिक पक्ष बहुत व्यापक था, जो समाज में परिवर्तन और एकता की भावना को बढ़ावा देता था।

यह आंदोलन अखिल भारतीय था और विभिन्न कालों में इसका व्यापक प्रभाव पड़ा। भक्ति आंदोलन ने केवल धार्मिक पक्ष को नहीं, बल्कि सामाजिक सुधार और सांस्कृतिक उन्नति को भी जन्म दिया। इसकी छाप पूरे देश में फैली, कश्मीर, तमिलनाडु, बंगाल, गुजरात और महाराष्ट्र जैसे विभिन्न प्रदेशों में इसके भक्ति-कवि जनता के दिलों को छूते रहे।

इस आंदोलन ने समाज को नए दिशा और चेतना दी। इससे जुड़े कवि-गायक जन-जन तक अपनी अमूल्य वाणी से पहुंचते रहे, जिससे लोगों के मन में प्रेम, सद्भावना और भक्ति की भावना जागृत हुई।

गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. तुलसीदास को किसका निर्माता माना गया है?

उत्तर:_____

_____

2. भक्ति आंदोलन का सामाजिक पक्ष कैसा था?

उत्तर:_____

_____

3. भक्ति आंदोलन ने समाज में कौन सी भावना को बढ़ावा दिया?

उत्तर:_____

_____

4. इस आंदोलन से जुड़े कवि-गायक जनता तक कैसे पहुँचते थे?

उत्तर:_____

_____

5. भक्ति आंदोलन की छाप किन-किन प्रदेशों में फैली थी?

उत्तर:_____

_____

Answer

1. तुलसीदास को किसका निर्माता माना गया है?

उत्तर: गद्यांश के अनुसार, तुलसीदास को भक्ति आंदोलन का निर्माता माना गया है।

2. भक्ति आंदोलन का सामाजिक पक्ष कैसा था?

उत्तर: भक्ति आंदोलन का सामाजिक पक्ष बहुत व्यापक था।

3. भक्ति आंदोलन ने समाज में कौन सी भावना को बढ़ावा दिया?

उत्तर: इस आंदोलन ने समाज में परिवर्तन और एकता की भावना को बढ़ावा दिया।

4. इस आंदोलन से जुड़े कवि-गायक जनता तक कैसे पहुँचते थे?

उत्तर: इस आंदोलन से जुड़े कवि-गायक अपनी अमूल्य वाणी से जन-जन तक पहुँचते थे।

5. भक्ति आंदोलन की छाप किन-किन प्रदेशों में फैली थी?

उत्तर: इसकी छाप कश्मीर, तमिलनाडु, बंगाल, गुजरात और महाराष्ट्र जैसे विभिन्न प्रदेशों में फैली थी।

Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com